शान्तिधाम और सुखधाम है सुख-चैन की दुनिया
बाप आया चैन की दुनिया में ले जाने, दुखधाम से छुड़ा
माया वार करती जब बाप पर निश्चय नही पक्का
दुःख- हर्ता ,सुख -कर्ता बाप की श्रीमत पर चलना
अपनी जांच करनी, विकारों को छोड़ना
नष्टोमोहा बनना,अवगुण त्यागना
ऐसा क्यों? ऐसा होना चाहिये? यह है रोब का अंश
रोब के अंश को भी समाप्त करना
सहयोगी बनना ,गिरे हुए को भी उठाना
जो करेगा वो जरूर पायेगा
उड़ती कला का अनुभव तब होता जब
सन्तुष्टता और प्रसन्नता का गुण हो अपनाया

ॐ शान्ति!!!
मेरा बाबा !!!